International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-4, Issue-2 April - 2017 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

गाँधी जी के अनुसार शिक्षा एवं शिक्षा दर्शन के लक्ष्य एवं सिद्धान्त

डॉ0 मनोरमा राय,
विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग
धर्मेन्द्र सिंह मैमोरियल कॉलिज, अटौला, मेरठ

सार
गाँधीजी भारतीय शिक्षा को 'द ब्यूटीफुल ट्री' कहा करते थे। इसके पीछे कारण यह था कि गाँधी ने भारत की शिक्षा के बारे में जो कुछ पढ़ा था, उससे पाया था कि भारत में शिक्षा सरकारों के बजाय समाज के अधीन थी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का व्यक्तित्व और कृतित्व आदर्शवादी रहा है। उनका आचरण प्रयोजनवादी विचारधारा से ओतप्रोत था। संसार के अधिकांश लोग उन्हें महान राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रूप में जानते हैं। पर उनका यह मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का एक मत्वपूर्ण योगदान होता है।

प्रस्तावना
स्व. डॉ० धर्मपाल प्रसिद्ध गाँधीवादी चिन्तक रहे हैं। उन्होंने भारतीय ज्ञान, विज्ञान, समाज, राजनीति और शिक्षा को लेकर बहुत ही महत्वपूर्ण शोध किया है। गाँधी के वाक्य 'द ब्यूटीफुल ट्री' को जस का तस लेकर डॉ० धर्मपाल ने अपना शोध शुरू किया और अँगरेजों और उससे पूर्व के समस्त दस्तावेज खंगाले। जो कुछ भारत में मिला उन्हें संग्रहालयों और ग्रंथालयों से लिया और जो जानकारी भारत से बाहर ईस्ट इंडिया कंपनी और यहाँ तक कि सर टामस रो से लेकर अँगरेजों के भारत छोड़ने तक की, इंग्लैंड में उपलब्ध थी, उसे वहाँ जाकर खोजा। धर्मपालजी ने अँगरेजकालीन घटनाओं का जो ऐतिहासिक अन्वेषण कर यह साबित किया कि जिस प्रकार उन लोगों ने न केवल हमारे अर्थशास्त्र और कुटीर उद्योग को समाप्त कर हमारे पूरे अर्थतंत्र को डस लिया, बल्कि भारत का सांस्कृतिक, साहित्यिक, नैतिक और आध्यात्मिक विखंडन भी किया जिससे भारत अपना भारतपन ही भूल गया और अँगरेजी शिक्षा से आच्छन्न यहाँ के कुछ बड़े घरानों के लोग भारत भाग्य विधाता बन गए।

शिक्षादर्शन के उद्देश्य
लक्ष्यः–
गाँधी जी के विचार से मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य मुक्ति है। मुक्ति को इन्होंने बड़े व्यापक अर्थ में लिया है। ये पहले शारीरिक, मानसिक, आर्थिक व राजनीतिक मुक्ति की बात करते थे फिर आत्मिक मुक्ति की। उनका तर्क था कि जब तक मनुष्य को शारीरिक दुर्बलता, मानसिक तनाव, आर्थिक अभाव और राजनैतिक दासता से मुक्ति नहीं मिलती तब तक वह आध्यात्मिक मुक्ति की प्राप्ति नहीं कर सकता। यही कारण है कि वे शिक्षा द्वारा मनुष्य के शरीर, मन एवं आत्मा का उच्चतम विकास करना चाहते थे। शिक्षा एवं उसके उद्देश्यों के सम्बन्ध में गाँधी जी ने जो विचार व्यक्त किये हैं उसको हम निम्नलिखित क्रम में अभिव्यक्त कर सकते हो–

1. शारीरिक विकास – मनुष्य जीवन का कोई भी उद्देश्य क्यों न हो उसकी प्राप्ति इस शरीर द्वारा ही होती है अतः इसका विकास अवश्य करना चाहिए। अपने विद्यालयी जीवन में ही गाँधी जी ने शिक्षा के इस उद्देश्य की आवश्यकता अनुभव कर ली थी। आगे चलकर इन्होंने इसे आत्मिक विकास के लिए भी आवश्यक समझा।

2. मानसिक एवं बौद्धिक विकास – गाँधी जी के अनुसार शरीर के साथ मन और आत्मा का भी विकास होना चाहिए। इनका कहना था कि जिस प्रकार शारीरिक विकास हेतु माँ के दूध की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मानसिक विकास के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है। शिक्षा को यह कार्य अवश्य करना चाहिए।

3. व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास – गाँधी जी व्यक्ति के व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों प्रकार के विकास पर बल देते थे। व्यक्ति के व्यक्तिगत विकास को ये व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र सभी के विकास के लिए आवश्यक मानते थे। इनकी दृष्टि से व्यक्तिगत विकास का उच्चतम रूप आत्मिक विकास है और आत्मिक विकास के लिए मनुष्य का सामाजिक विकास आवश्यक है। सामाजिक विकास से गाँधी जी का तात्पर्य मनुष्य को समाज में प्रेम और सहयोग के

साथ रहना सिखाने से था। इनका विश्वास था कि मानव मात्र से प्रेम करने एवं मानवमात्र की सेवा करने से ही आत्मिक विकास सम्भव है।

4. सांस्कृतिक विकास – गाँधी जी के अनुसार संस्कृति का सम्बन्ध आत्मा से होता है, और यह मनुष्य के व्यवहार में प्रकट होती है। ये मनुष्य के व्यवहार को नियन्त्रित करने एवं उसकी आत्मिक उन्नति के लिए उसके सांस्कृतिक विकास को आवश्यक समझते थे और इसे शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानते थे।

5. नैतिक एवं चारित्रिक विकास – गाँधी जी चरित्र बल के महत्व को जानते थे। ये शिक्षा द्वारा इसके विकास पर बल देते थे। ये एक उत्तम चरित्र में सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिगृह और निर्भयता– इन गुणों का होना आवश्यक समझते थे। विद्यालयों को ये चरित्र निर्माण की उद्योगशाला कहा करते थे। चरित्र निर्माण के सम्बन्ध में इन्होंने लिखा है, ''सभी ज्ञान का उद्देश्य उत्तम चरित्र का निर्माण होना चाहिए।''

6. व्यवसायिक विकास – आर्थिक अभाव से मुक्ति पाने के लिए गाँधी जी शिक्षा के व्यावसायिक उद्देश्य पर बल देते थे। ये मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे और इसके लिए उसे किसी हस्तकौशल एवं उद्योग की शिक्षा देने पर बल देते थे। इन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि शैक्षिक शिक्षा द्वारा बच्चों को कम से कम अपनी जीविका चलाने योग्य बनाना चाहिए।

7. आध्यात्मिक विकास – गाँधी जी के अनुसार मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य मुक्ति, आत्यानुभूति आत्मज्ञान अथवा आत्मबोध है। जिन शारीरिक, मानसिक, व्यक्तिगत, सामाजिक, सांस्कृतिक, चारित्रिक एवं व्यावसायिक विकास की हमने ऊपर चर्चा की है इन सबका अन्तिम उद्देश्य भी मनुष्य को आत्मज्ञान करने में सहायता करना है। इसके लिए गाँधी जी धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की भी आवश्यकता समझते थे। इस सम्बन्ध में गाँधी जी गीता से प्रभावित थे। ये ज्ञान, कर्म, भक्ति और योग इन सब पर समान बल देते थे। अहिंसा और सत्याग्रह को ये इनका मूर्त रूप मानते थे।

सिद्धान्तः–

गाँधी जी के 'शिक्षा के सिद्धान्त' निम्नलिखित है

- 7 से 14 वर्ष के बालकों की शिक्षा निःशुल्क तथा अनिवार्य होना चाहिए।
- शिक्षा का माध्यम बालक की मातृ–भाषा होना चाहिए।
- अंग्रेजी का बालक की शिक्षा में कोई स्थान नहीं होना चाहिए।
- साक्षरता को शिक्षा नहीं कहा जा सकता।
- शिक्षा को बालक में मानवीय गुणों का विकास करना चाहिए।
- शिक्षा बालक की समस्त शक्तियों का विकास उस समुदाय के अनुसार करे जिसका वह सदस्य है।
- शिक्षा को बालक के हृदय, मन तथा आत्मा का सामंजस्य पूर्ण विकास करना चाहिए।
- शिक्षा किसी लाभप्रद दस्तकारी से होनी चाहिए जिससे बालक अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर सके।
- सभी प्रकार की शिक्षा किसी न किसी उत्पादन उद्योग के माध्यम से दी जानी चाहिए तथा इसका उस उद्योग से सह–सम्बन्ध स्थापित किया जाना चाहिए।
- सभी विषयों की शिक्षा किसी स्थानीय उद्योग के माध्यम द्वारा दी जानी चाहिए।
- उद्योग ऐसा हो जिससे बालक को क्रिया द्वारा अनुभव प्राप्त हो सके।
- शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसको प्राप्त करके बालकों को कोई न कोई रोजगार मिल जाये।
- स्कूल ऐसा होना चाहिए जहाँ बालक अनेक प्रकार के प्रयोगों द्वारा नई–नई खोजें करता रहे।
- शिक्षा को उपयोगी नागरिकों का निर्माण करना चाहिए।

शिक्षा का माध्यम

गाँधी जी ने शिक्षा का माध्यम विशेषकर बेसिक शिक्षा का माध्यम मातृ–भाषा रखा है। इस सम्बन्ध में गाँधी जी ने कहा था, मुझे मातृ–भाषा से उसी प्रकार चिपटे रहना चाहिए जिस तरह मैं अपने माता के स्तनों से चिपटा रहता हूँ, चाहे उसमें कितना ही दोष क्यों न हो, वही मुझे जीवनदायक दुग्ध प्रदान कर सकती है। गाँधी जी शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी के कट्टर विरोधी थे। उस सम्बन्ध में उन्होंने कहा था आज जबकि हमारे पास निःशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक

शिक्षा को प्रारम्भ करने के साधन तक नहीं हैं हम अंग्रेजी पढ़ाने की किस तरह व्यवस्था कर सकते हैं। रूस ने अंग्रेजी के बिना ही अपनी समस्त वैज्ञानिक प्रगति की है, यह हमारी मानसिक दासता ही है कि जो कि हमें अनुभव करने को बाध्य करती है कि हम अंग्रेजी के बिना काम नहीं चला सकते। मैं कभी भी इस पलायनशील मत का समर्थन नहीं कर सकता। गाँधी जी का विचार था कि राष्ट्र–भाषा के माध्यम से शिक्षा होने पर ही देश की संस्कृति एवं साहित्य समूह होंगे और विभिन्न वर्ग के व्यक्तियों में भाई–चारा बढ़ेगा। पूरा विश्व इस बात का साक्षी है कि जिस किसी भी देश ने अपनी मातृ–भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया है उस देश ने विकास के हर क्षेत्र में चाहे वह आर्थिक हो, सामाजिक हो, सांस्कृतिक हो, नैतिक हो, सब में प्रगति अर्जित की है। गाँधी जी इस बात को बड़ी समझदारी से महसूस करते थे इसीलिए शिक्षा के माध्यम में मातृ–भाषा अपनाने पर विशेष जोर देने के पक्षपाती थे। अंग्रेजी को माध्यम बनाने से बालकों के स्वाभाविक विकास में बाधा पड़ती है और उनकी मानसिकता नष्ट होती है। गाँधी जी के शब्दों में– बालकों पर अंग्रेजी को लादना उनके प्राकृतिक विकास से कुण्ठित करना है और संभवतया उनमें मौलिकता को नष्ट कर देना है।

गांधीजी की बेसिक अथवा बुनियादी शिक्षा

अविनाशलिंगम के शब्दों में ''बुनियादी शिक्षा हमारे राष्ट्रपिता का अंतिम और संभवतः महानतम् उपहार है।''

सन् 1937 में गांधीजी ने वर्धा में हो रहे 'अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन' जिसे 'वर्धा शिक्षा सम्मेलन' कहा गया था। उसमें अपनी बेसिक शिक्षा की नयी योजना को प्रस्तुत किया। जो कि मेट्रिक स्तर तक अंग्रेजी रहित तथा उद्योगों पर आधारित थी। जामिया मिलिया के तत्कालिक प्रिंसिपल डॉ० जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में 'जाकिर हुसैन समिति' का निर्माण किया गया तथा गांधीजी के शिक्षा संबंधी विद्यायें तथा सम्मेलन द्वारा पारित किये गये प्रस्तावों के आधार पर 'नई तालिम' (बुनियादी शिक्षा) की योजना तैयार की गई। तथा 1938 में हरिपुर के अधिवेशन ने इन रिपोर्ट को स्वीकृति दी। जो कि 'वर्धा–शिक्षा–योजना' के नाम से प्रसिद्ध हुआ और बुनियादी शिक्षा का आधार है।

बुनियादी शिक्षा की विशेषताएँ

- बेसिक शिक्षा के पाठ्यक्रम की अवधि 7 वर्ष की है।
- 7 से 14 वर्ष के बालकों एवं बालिकाओं को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दी जाए।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा है। हिंदी भाषा का अध्ययन बालकों तथा बालिकाओं के लिए अनिवार्य है।
- संपूर्ण शिक्षा का संबंध आधारभूत शिल्प (ठेंपब ब्तंजि) से होता है।
- चुने हुए शिल्प की शिक्षा देकर अच्छा शिल्पी बनाकर स्वावलम्बी बनाया जाए।
- शिल्प की शिक्षा इस प्रकार दी जाए कि बालक उसके सामाजिक एवं वैज्ञानिक महत्व को समझ सके।
- शारीरिक श्रम को महत्व दिया गया ताकि सीखे हुए शिल्प के द्वारा जीविकोपार्जन कर सके।
- शिक्षा बालकों के जीवन, घर, ग्राम तथा ग्रामीण उद्योगों, हस्तशिल्पों और व्यवसाय घनिष्ट रूप से संबंधित हों।
- बालकों द्वारा बनाई गई वस्तुएं जिनका प्रयोग कर सके एवं उनको बेचकर विद्यालय के ऊपर कुछ व्यय कर सकें।
- छठवीं और सातवीं कक्षाओं में बालिकाएं आधारभूत शिल्प के स्थान पर गृहविज्ञान ले सकती हैं।

चूंकि बुनियादी शिक्षा राष्ट्रीय सभ्यता, संस्कृति के नजदीक थी साथ ही साथ सामुदायिक जीवन के आधारभूत व्यवसायों से जुड़ी हुई थी। तथा सीखे हुए आधारभूत शिल्प के द्वारा व्यक्ति अपने जीवन का निर्वाह कर सकता था। अतः यह शिक्षा हमारे जीवन के बुनियाद या आधार से जुड़ी हुई थी इसलिए इसका नाम बुनियादी या आधारभूत शिक्षा रखा गया।

गांधीजी ने बुनियादी शिक्षा के पाठ्क्रम के अंतर्गत आधारभूत शिल्प जैसेः कृषि, कताई–बुनाई, लकड़ी, चमड़े, मिट्टी का काम, पुस्तक कला, मछली पालन, फल व सब्जी की बागवानी, बालिकाओं हेतु गृहविज्ञान तथा स्थानीय एवं भौगोलिक आवश्यकताओं के अनुकूल शिक्षाप्रद हस्तशिल्प इसके अलावा मातृभाषा, गणित, सामाजिक अध्ययन एवं सामान्य विज्ञान, कला, हिंदी, शारीरिक शिक्षा आदि रखा। शिक्षण विधि को शिक्षण का वास्तविक कार्य–क्रियाओं और अनुभवों पर अनिवार्य रूप से आधारित किया। उनके अनुसार शिक्षण विधि व्यावहारिक हो। बालकों को विभिन्न विषयों की शिक्षा किसी आधारभूत शिल्प के माध्यम से दी जाए। करके सीखना, अनुभव द्वारा सीखना तथा क्रिया के माध्यम से सीखने पर बल दिया गया। गांधीजी ने बुनियादी शिक्षा में सीखने की समवाय पद्धति का उपयोग किया। जिसक अंतर्गत उन्होंने समस्त विषयों की शिक्षा किसी कार्य या हस्तशिल्प के माध्यम से दी।

गांधीजी की शिक्षा संबंधी विचारधारा की प्रासंगिकता वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपर्युक्त व्याख्या का मूल्यांकन किया जाए तो इस तथ्य पर पहुंचते हैं कि गांधीजी का शिक्षादर्शन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी प्रासंगिक है। सर्वप्रथम गांधीजी द्वारा भारतीय जीवन को दृष्टिगत रखते हुए वातावरण के अनुसार ऐसी शिक्षा योजना प्रस्तुत किया गया जिसको कार्यरूप में परिणत करने में भारतीय समाज में एक नया जीवन आने की संभावना है। गांधीजी हृदय से आदर्शवादी थे क्योंकि वे जीवन के अंतिम लक्ष्य सत्य को प्राप्त करने की प्रेरणा प्रदान करता है। गांधीजी को प्रयोजनवादी भी कह सकते हैं, क्योंकि वे बालक की रुचि के अनुसार क्रिया करके सीखने पर बल देते हैं। उनको प्रकृतिवादी इसलिये कह सकते हैं कि वे बालक को उसकी प्रकृति के अनुसार विकसित करना चाहते थे। ध्यान देने वाली बात यह है कि उनके शिक्षादर्शन में तीनों विचारधाराओं में कोई विशेष अर्थ नहीं था।

गांधीजी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के सिद्धांत जैसे बालकों एवं बालिकाओं को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दिया जाए। आज हम देखते हैं देश के समस्त वर्गों को शिक्षित करने करने हेतु कई तरह के प्रयास किए जा रहे हैं। निःशुल्क, अनिवार्य शिक्षा साथ ही साथ बालकों एवं बालिकाओं के लिए कई योजनाओं का निर्माण किया गया है। ताकि अधिक से अधिक बालकों को शिक्षा की प्राप्ति हो सके। वर्तमान में हम देखते हैं कि आज युवाओं के पास कई तरह की डिग्री है परंतु रोजगार नहीं है। अतः गांधीजी ने बहुत वर्ष पहले ही इस समस्या को इंगित कर दिया था और उन्होंने बुनियादी शिक्षा के अंतर्गत उद्योगों पर आधारित शिक्षा पर बल दिया ताकि बालक किसी न किसी हस्तशिल्प को सीखकर आत्मनिर्भर बन सके। बेरोजगारी से मुक्ति प्राप्त कर सके। वर्तमान में अब व्यवहारिक शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा को बल दिया जा रहा है। गांधीजी बालकों में मानवीय गुणों का विकास करने पर बल देते थे। जिसकी आज भी प्रासंगिकता है क्योंकि आज जो विनाश और तबाही फैल रही है वह मनुष्यों में मानवता की कमी के कारण बढ़ती जा रही है। गांधीजी ने करके या क्रिया द्वारा सीखने पर बल दिया है जो कि आज भी उतना ही आवश्यक है क्योंकि क्रिया या स्वयं करके सीखने पर सीखा हुआ ज्ञान स्थाई होता है जो हर क्षेत्र के लिए आवश्यक है। गांधीजी ने शारीरिक श्रम का सम्मान किया। उनके अनुसार मनुष्य को अपना कार्य स्वयं करना चाहिए। किसी पर निर्भर नहीं होना चाहिए। साथ ही साथ भेदभाव भी मिटता है। जो आज के परिप्रेक्ष्य में भी आवश्यक है। जो काम का आदर करेगा वही उत्पादन कार्य से जुड़ सकता है।

गांधीजी के द्वारा दिये गये आर्थिक, नैतिक, सांस्कृतिक, नागरिकता का उद्देश्य साथ ही साथ सर्वोदय समाज की स्थापना जिसके अंतर्गत श्रम का महत्व होगा, धन का नहीं, स्नेह और सहयोग की भावनाएं होंगी, घृणा एवं पृथकता नहीं, शोषण के स्थान पर परहित एवं संचय की प्रवृत्ति के स्थान पर त्याग की प्रवृत्ति होगी। वर्तमान में शोषण, घृणा, स्वार्थ सिद्धि जैसे कुधारणा के कारण मारकाट, विनाश तथा मानवता का हनन हो रहा है। अतः हम कह सकते हैं कि गांधीजी की सर्वोदय समाज की स्थापना का उद्देश्य आज आवश्यक बन गया है। गांधीजी ने धर्म की शिक्षा का भी बहिष्कार किया। क्योंकि उन्हें भय था कि जिन धर्मों की शिक्षा दी जाती है अथवा पालन किया जाता है वे मेल के स्थान पर झगड़े उत्पन्न करते हैं। वर्तमान स्थिति भी इस बात की समर्थक है।

निष्कर्ष

गांधीजी के द्वारा दिये गये शिक्षा के सिद्धांत, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षणविधि आज भी बालकों तथा बालिकाओं, विद्यालय तथा समाज के लिए उतने ही आवश्यक है जितने पहले उनकी महत्वपूर्ण कृति बुनियादी शिक्षा अथवा बेसिक शिक्षा बच्चों को, चाहे वे नगरों के हों या ग्रामों के, समस्त सर्वोत्तम एवं स्थाई बातों से संबंध रखती है। एवं बालकों को स्वावलम्बी बनाने में मददगार सिद्ध हुई है। उनकी शिक्षा केवल मानसिक विकास की ओर ही ध्यान नहीं देती बल्कि शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिये भी उपयोगी हुई है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नारायण हृदय मिश्र, समाज दर्शन सैद्धांतिक एवं समस्यात्मक विवेचन, प्रकाशक, षेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, शष्टम् संस्करण 2014
2. त्रिपाठी, लालबचन : ,"मनोवैज्ञानिक अनुसंधान विधियाँ", ,एच0पी0भार्गव बुक हाउस, कचहरी घाट, आगरा–282005, 2012
3. सुधीर सेव (इड), रवीन्द्रनाथ टैगोर, ऑन रूरल रिकंसट्रक्शन, शान्तिनिकेतन– विश्वभारती, 2010
4. टैगोर रवीन्द्रनाथ टैगोर :– "साधना" डिलिवर्ड एट द हावर्ड युनिवर्सिटी, यू.एस.ए. मैकमिलन कम्पनी न्यूयार्क– 1912–13
5. उपाध्याय, दीनदयाल : चतुर्थ संस्करण, "भारतीय अर्थ–नीति, विकास की एक दिशा", लोकहित प्रकाशन, संस्कृति भवन राजेन्द्रनगर,लखनऊ–226004, 2016

6. टैगोर रवीन्द्रनाथ :– "नेशनलिज्म" लेक्चर्स डिलीवर्ड एट जापान एण्ड द यूनाइटेड स्टेट्स 1916–17 मैकमिलन कम्पनी।
7. वालिया, जे0एस0 : "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक," अहम् पाल पब्लिशर्ज, गोपाल नगर, जालन्धर शहर (पंजाब), 2011